वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

अंग्रेजी हुकुमत के काल में भारतीय राजनीति एक अध्ययन

डॉ. वंदना तिवारी
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान- विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

सारांश

औपनिवेशिक काल की भारतीय राजनीति विकास की प्रारम्भिक अवस्था से गुजर रहा था क्योंकि भारतीय अभी तक ऐसे राज्य में जीवन जी रहा था जिसमें राजा ही शक्ति का प्रमुख केन्द्र होता था मंत्रिपरिषद केवल उसके सलाहकार की भूमिका में होती थी। ब्रिटिश आगमन के साथ ब्रिटिश नियमों कानूनों को भी आगमन भारत हुआ जिसके क्रिया प्रतिक्रिया एवं प्रतिरोध स्वरूप भारतीय बौद्धिक वर्ग जैसे राजा राममोहन राय द्वारिका नाथ टैगोर एवं अन्य बहुत से नेताओं ने अपने आने वाली पीढ़ी को मार्गदर्शन प्रदान किया जिसकी बुनियाद पर दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, फिरोजशाह मेहता, व्योमेशचन्द्र बनर्जी, लाला लाजपत राय,बालगंगाधर तिलक, सरदार वल्लभ भाई पटेल, नेहरू, सुभाषचन्द्र, अम्बेडकर जैसे महान राजनीतिक विश्लेषकों का समूह तैयार होता गया जिसमें अपने लिए एक राजनीतिक पृष्टभूमि ही तैयार नहीं किया अपितु एक उज्जवल भविष्य की कामना भी कि। इस शोध पत्र में अंग्रेजी हुकूमत के काल में विकसित भारतीय राजनीति का द्वितीयक विषयों के साथ सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द

हुकूमत, पृष्ठभूमि, सम्प्रदायवाद, बौद्धिक वर्ग, पीढ़ी, राष्ट्रवादी भावना।

परिचय

ब्रिटिश कम्पनी के आगमन से लेकर विस्तार के साथ भारतीय लोगों पर लादे गये कानून और उससे उत्पन्न हुए विद्रोहों के कारण जागरूक होता समाज तथा विद्रोहों को कठोरता से दबाने पर उसकी कठोरता का परीक्षण करता भारतीय बौद्धिक वर्ग हमेशा से ही भारतीय लोगों को नेतृत्व प्रदान करता रहा है जिसकी महत्ता निः संदेह भारतीयों के लिए अनुपम है लेकिन अपने

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

परम्परागत सादगी पूर्ण वैचारिकता में टपक पड़े अंग्रेजी विषदंत ने अपने आगोश में लेकर लालच, फरेव और राजनीतिक लोलुपशा तथा जातिवाद, संप्रदायवाद और क्षेत्रवादी भावना में तब्दील कर दिया जो अपने विशाल रूप में 1947 के विभाजन/स्वतंत्रता के रूप में दिखाई पड़ता है। इसका अध्ययन करने के लिए हमें पीछे के काल खंडो की यात्रा करनी पडेगी जैसे 1453 ई. में कस्तुनतुनिया के पतन के उपरांत जब यूरोपिय लोगों को भारतीय कपास, मसाले सोरा एवं अन्य महत्वपूर्ण चीजें प्राप्त नहीं हो पाती तो वह उनकी खोज करने का प्रयास करते है जो उस समय अधिक कीमत पर यूरोप के बाजारों में प्राप्त होते थे। ऐसे में ये यूरोपीय कीड़े भारत के लिए नये रास्ते की खोज में लग गये और उन्हें ऐसे जमीन ही नही मिली ऐसी जमीनें मिली जहां उन्होंने व्यापार के लिए अपनी घडियाली आसुँ के साथ व्यापारिक कोढ़ियों के लिए यहॉ के सम्राटों एवं रियासतों के सामने याचना भी करना प्रारम्भ किया यहॉ के दयालू एवं अदूरदर्शी राजाओं ने इन गोरे कीड़ों को आश्रम ही नहीं दिया अपितु राह भी दिया जिसका खामियाजा उन राजाओं के उत्तराधिकारियों को ही नहीं झेलना पड़ा अपितु यहां की सीधी और असहाय जनता को भी झेलना पड़ा - पहले पुर्तगाली आये कार्टेजा (ब्लू वाटर पॉलिसी) से धन कमाया, इन आये लूट का आश्रय भी लिया अंग्रेज आये जिन्होंने अपने से पहले आने वाली व्यापारिक कम्पनियों तथा वाद में आने वाली व्यापारिक कम्पनियों को लगभग कुछ क्षेत्र विशेष तक ही सीमित कर दिया अब शुरू हु आ असली चालवाज गोरे खिलाड़ी का खेल, जो कहता है कि भारत को हमने अनमने ढंग से जीत लिया इसका हम विस्तार से अध्ययन करेंगे- पहली बात तो ब्रिटिश कम्पनी निजी कम्पनी थी जिसका ब्रिटेन की सरकार के प्रति उत्तरादायित्व था जो वह आदेश देता था उसको शत प्रतिशत करके उसे अंजाम देने का काम कम्पनी को करना ही थी।

पहले ब्रिटेन का उद्देश्य था ब्रिटिश व्यापारिक एकाधिकार दूसरा औपनिवेशिक विस्तार, पहले उद्देश्य को पूरा के करने के लिए कम्पनी ने पहले भारतीय रियासतोंएवं राजाओं को उपहार एवं अन्य लालच में बहकावे में रख और जब ब्रिटिश कपंनी ने विदरा के मुंह में डचों को एवं वाडियावाश के युद्ध में फ्रांसीसियों को अपने अपने रास्ते से हटा नहीं दिया तब तक विस्तार करना तो दूरी प्रत्यक्ष रूप से सामने वे अदब से बात भी नहीं किया और जैसे ही सभी व्यापारिक यूरोपीय कम्पनियां हटी वैसे ही विस्तार का खेल फूट डालों और राज्य करों की नीति से प्रारम्भ

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

हुआ और इसकी शुरूआत प्लासी के षडयंत्र से प्रारम्भ हुआ जिससे कम्पनी को बंगाल पर अधिकार मिल गया वहीं बक्सर के युद्ध के उपरान्त कम्पनी को 1765 तक बंगाल, बिहार, उडीसा की दिवानी प्राप्त हो गयी जिससे उन्होंने बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली से प्रारम्भ किया और 1772 से उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि अपने नींव पर खड़ी होने लगी थी इसके बाद एक बाद एक एक्टों, अधिनियमियों के माध्यम से उन्होंने भारतीय भूमि पर विस्तार करना प्रारम्भ किया जिसके लिए उन्होंने ऐसे भारतीय लोगों का भी सहारा लिया जो लालच में अपनी जमीन बेचकर सौदा करने के लिए तैयार थे ऐसे में सहायक संधि एवं हड़प नीति के द्वारा भारतीय रियासतों की विदेशी नीति को अपने कब्जे में लेकर तरह-तरह के हथकंडे अपनाने का प्रयास करना प्रारम्भ किया जो पिट्स इंडिया एक्ट 1784, संशोधन एक्ट, 1792, 1813, 1835, 1853 के चार्टर एक्टों के द्वारा और मजबूत होता चला गया।[1] इस बीच कुछ बौद्धिक वर्ग अंग्रेज अधिकारियों एवं नेताओं के साथ मिलकर कुछ महत्वपूर्ण संस्थाओं को स्थापित करना भी प्रारम्भ कर दिया जिसमें लैंड होल्डर सोसायटी जैसे अनेकों संस्थाओं का निर्माण किया जिसने आंशिक रूप से ही सही भारतीयों का शिक्षित करने का कार्य किया क्योंकि अंग्रेजी वैचारिकता भारत में स्वीकार्य तो नहीं थी लेकिन इस विचार धारा को प्रश्रय जरूर मिलता था।

1857 के पहले तक भारतीय समझने लगा था कि विदेशी हमारे साथ गलत कर रहा है। जब विदेशी अधिकारी भारतीयों का अपमान करते थे तो उनको यह लगता था कि हमारे देश में आकर यहीं पर शासन कर रहे गैर नृंजातीय वर्ग के लोग भारत में अपना और अपने देश का हित साध रहे हैं इसके लिए बौद्धिक वर्ग यह सोच रहा था कि पहले अपने सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में व्याप्त कुरूतियों को समाप्त करने के लिए अनेकों प्रयास किया जाये जो उत्तर-दक्षिण, पू., पश्चिम सभी क्षेत्रों में प्रारम्भ हुआ जिसमें भारत के लोगों को समझ में आने लगा कि में विदेशी लोग हमारे संसाधनों का उपयोग भी कर रहे है और हमसे राजस्व की उगाही भी कर रहे हैं। चूँकि भारत 19 शताब्दी के अंतिम दशक तक राष्ट्रवादी भावना, विचारधारा से ओतप्रोत नहीं हो पाया था सिर्फ कुछ पढ़े लिखे बौद्धिक वर्ग के लोगों ने अंग्रेजी राजनीति की समझ विकसित कर उसका प्रतिकार करने का प्रयास कर रहे थे वे जान चुके थे कि प्रेस ही एक ऐसा माध्यम है जिससे कुछ समय में अधिक से अधिक बौद्धिक वर्ग के लोगों को जोड़ा जा

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

सकता है। और उनके माध्यम से उनके साथ जुड़े उस भाषा। क्षेत्र के साथ जुड़ाव किया जा सकता है ऐसे में राजा राम मोहन राय, गोविन्द्र महादेव रानाडे, फिरोजशाह मेहता, आनन्द पी चारलू और वाद में सुरेन्द्र नाथ वेनर्जी, अरविन्द्र घोष, बालगंगाधर तिलक इत्यादि बौद्धिक लोगों ने अपने समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के माध्यम से युवाओं को जगृत करने का काम किया तो कहीं किसी संस्था के माध्यम से वहाॅ के लोगों में जन जागरूकता का प्रोग्राम किया अंग्रेजी हुकुमत हर सम्भव प्रयास करके इनके योजनाओं को रोकने के लिए कठोरता से दमन का सहारा लेती थी फिर भी देश के विभिन्न भागों में रहनेवाले कार्यकर्ताओं ने अपने विचारों को प्रसारित करने के लिए उपन्यासों, निबंधों और देश भक्तिपूर्ण काव्य आदि के रूप में राष्ट्रीय साहित्य से भी राष्ट्रीय चेतना का अद्भुत संचार किया बंगाल के बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवीन्द्रनाथ, असम के लक्ष्मीनाम बेखवरूआ, मराठा में विष्णु शास्त्री चिपुलकर, तमिल में सुब्रमण्यम भारती, हिंदी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में अल्ताफ हुसैल हाली ने अपने अद्‌वितीय योगदान से राष्ट्र्वादी विचारधारा को प्रसारित किया।[2]

पुनः अगर देखा जाय तो औपनिवेशिक चरण में वाणिज्यिक पूँजीवाद (1757-1813) का चरण एवं औधोगिक पूँजीवादी चरण (1813-1857) उतना खतरनाक नहीं था जितना वित्तीय पूँजीवाद का चरण औद्‌योगिक पूँजीवाद का चरण- खुली लूट का चरण था जिसे के. एम. पन्निकर इसे चरण को 'डाकू राज्य' कहते हैं,[3] अधिक खतरनाक तो वह होता है जिसके स्वरूप को देखने और समझने में जटिलताओं का सामना करना पडता है ऐसा ही चरण था वित्तीय पूँजीवाद का चरण इस लूट को समझने का प्रथम प्रयास किया दादा भाई नौरोजी ने किया उन्होंने धन निष्कासन का सिद्धान्त दिया उन्होंने अपनी पुस्तक द पावर्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया, में इसका उल्लेख किया साथ ही 2 मई 1867 को लंदन ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की बैठक में अपने लेख इंग्लैण्ड डेट टू इण्डिया में स्पष्ट कर दिया कि किस तरह अंग्रेजी हुकूमत भारत से धन ले जा रहा है।[4] ए. आर. देसाई ने लिखा है कि वित्तीय पूँजी के इस काल में भारत में एक तरफ वित्त दोहन का नया स्वरूप विकसित हो रहा था तो दूसरी तरफ औधोगीकरण के नाम पर पूँजी लगायी जा रही थी दोनों हाथों में ब्रिटिश हुकुमत को लाभ ही लाभ था एक पूँजी निवेश की धरातल को तैयार करने का साधन वना रहा था दूसरा पूँजी दे

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

रहा था जो 1929 में 70 करोड पौंड से बढ़कर 1933 में 100 करोड़ पौंड हो गयी थी।[5] भारत शासन अधिनियम 1858 द्वारा भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी से सम्राट को सौंप दिया गया जिससे ब्रिटेन प्रत्यक्ष रूप से भारत का संरक्षक बन गया और भारत पर प्रशासन करने के लिए भारत राज्य सचिव के पद का सृजन कर दिया जो भारत के सभी मामलों के लिए भारत सचिव एवं उसकी 15 सदस्यीय परिसर के अधीन कर दिया गया, यह संसद के प्रति उत्तरदायी था यह नियंत्रण धीरे-धीरे कम होता गया जिसे भारत के गवर्नर जनरल और प्रांतों के गवर्नर भारतीय स्वतंत्रता तक भारतीय राजनीति का संचालन करते रहे जिसमें 1909,1919 और 1935 के एक्टों के द्वारा नये -नये प्रावधन लाकर भारतीय लोगों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया, लेकिन गवर्नर जनरल की शक्ति में कभी भी कमी नहीं दिखाई पड़ती है।

औपनिवेशिक काल में भारतीय भूमि में राजनीति के नये तौर-तरीके प्रस्फूटित हुए अभी तक भारतीय रियासतें एवं राजाओं मे राजतंत्रात्मक पद्धति ऐसे में भारतीय राजनीतिक सामाजिक चिंतक समय और परिस्थितियों की नजाकत को समझते हुए पहले आसान रास्ता याचना प्रार्थना फिर कठोरता एक नरम तो दूसरा गरम जिससे विदेशी हमारी भावना को समझ ही नहीं पाये एक शांत एवं अहिंसा का सहारा लेने वाला तो दूसरा उग्र एवं प्रचण्ड अपने अधिकार को छिनने वाला दोनों में कभी-कभी वैचारिक मतभेद भले लोगों में दिखाई पड़े लेकिन एक होना उनकी फितरत थी जैसे एक परिवार चाहे वह छोटी-छोटी बातों के लिए प्रतिदिन लड़ता हो लेकिन बाहरी व्यक्ति के लिए एक हो जाना उस परिवार की फितरत होती है चूँकि यहॉ हमारा सामना ऐसे चालवाज से हो रहा था जो हमारे परिवार में घुस चुका था और हमारे परिवार में राजनीतिक पद रूपी लालच भरने का हर संभव प्रयास कर रहा था 1990 में मार्ले मिंटों एक्ट का सम्प्रदायिक आधार पर मुस्लिमों का विभाजन एवं 1919 के चेम्सफोड एक्ट में सिक्ख ईसाई में आरक्षित सीटों का बटवारा एवं 1932 में संप्रदायिक पंचा अनुसूचित जाति का विभाजन कर विषदंत बायां जो कहीं न कहीं मानवीय कमजोरी बनकर उभर गया उसे ही संप्रदायिकता का मूल समझ जाय इस पर भी भारतीय राजनेता एवं राष्ट्रीय कांग्रेस एवं महात्मागांधी, नेहरू, सुबाषचन्द्र, जयप्रकाश, पटेल और राजेन्द्र प्रसाद राममनोहर लोहिया जैसे महान नेताओं ने अपनी सूझबूझ से क्रमिक रूप से 1905 स्वदेशी आंदोलन, होमरूल आंदोलन, असहयोग आंदोलन सविनय अवज्ञा आंदोलन,

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारत छोड़ो जैसे जन आंदोलनों के माध्यम से भारतीय जनमानस को एक कर दिया यही नहीं अंग्रेज समझ रहा था कि अब भारत में रूकना आसान नहीं है इसलिए उसने भारतीय विविधता को ही भारत की कमजोरी वना कर छोड दिया। लेकिन भारत आज भी उसी विविधता में एकता को अपनी ताकत बनाकर चल रहा है जिससे हमारे राजनेताओं का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। जिसे हमें याद ही नहीं रखना चाहिए अपितु उन आदर्शों का अनुसरण भी करना चाहिए।

निष्कर्ष

इस प्रकार हमने देखा कि अंग्रेजी हुकूमत भारत अपने आगमन से लेकर प्रस्थान तक जिन नीतियों का अनुसरण किया भारतीय उन प्राशासनिक नीतियों का प्रतिरोध एवं प्रतिक्रिया द्वारा समाधान करता रहा धीरे-धीरे भारतीय मानस समय और परिस्थितियों की नजाकत के साथ अपनी लाचारी भुखमरी के साथ स्वाभिमान के लिए एक अखण्ड भारत का स्वप्न लेकर आये जिसका परिणाम था भारतीय स्वतंत्रता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दुर्गादासवासु- भारतीय संविधान
2. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, आधुनिक भारत का इतिहास विपिनचन्द्र पृष्ठ सं.197
3. डॉ. एम. के. पाण्डेय आधुनिक भारत-
4. भारत में स्वतंत्रता आंदोलन आधुनिक भारत का इतिहास
5. भारतीय शासन और राजनीति- राधु पवार/ आरजू मिश्रा अमन पृष्ठ सं. 11